>

Title: Regarding alleged mismanagement in the Health Sector.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण : महोदया, आपने मुझे शून्य काल के तहत चिकित्सा क्षेत्र में व्याप्त अराजकता जैसे लोकमहत्व के विषय पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

महोदया, चिकित्सा क्षेत्र को हमारे समाज में पवित्र व पावन माना जाता है। लोग चिकित्सक को भगवान स्वरूप मानकर पूज्य भाव से सम्मान देते हैं तथा उस पर विश्वास करते हैं, लेकिन आज उसमें परिवर्तन देखने को मिल रहा है। बड़े-बड़े कारपोरेट हास्पिटल्स में चिकित्सा के नाम पर लूट हो रही है। मरीज को सिर्फ एक ग्राहक समझा जा रहा है तथा भिन्न-भिन्न तरीकों से उसे लूटा जा रहा है। जरूरत हो या न हो, विभिन्न जांचों के नाम पर, ट्रीटमेंट के नाम पर बड़ा खर्चा करवाया जा रहा है। मध्यम एवं गरीब लोगों का शोषण हो रहा है तथा वे किसी इलाज से पहले ही आर्थिक कर्ज के बोझ से दबकर अधमरे हो जाते हैं। एक सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार 70 प्रतिशत हार्ट की बाईपास सर्जरी अनावश्यक (बिना जरूरी) होते हुए भी हो रही है। मरणासन्न मरीज को, जिसके बचने का कोई चांस न होने पर भी उसे वेंटीलेटर पर रखकर बड़ा बिल बनाया जा रहा है। बाद में मरीज का अवसान हो जाने के बाद हजारों, लाखों रूपये का बिल मरीज के संबंधियों को पकड़ाया जाता है और जब तक बिल की पूरी रकम काउंटर पर जमा नहीं करवाते, तब तक मरीज की डैड बॉडी उसके परिजनों के सुपुर्द नहीं की जाती तथा उनके साथ उस गमगीन घड़ी में भी रूखा व्यवहार किया जाता है। देश के अधिकतर कारपोरेट अस्पतालों में लोगों को यह कटु अनुभव हो रहा है तथा इन पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है।

महोदया, मैं आपके माध्यम से आरोग्य विभाग को यह सुझाव देना चाहता हूं कि देश के गरीब मध्यम वर्ग के लोगों को ऐसे अनावश्यक खर्चों से बचाया जाये। विगत वर्षों में चिकित्सा क्षेत्र का जो व्यावसायीकरण हुआ है, उसे दूर किया जाये। अंत में मेरा निवेदन है कि चिकित्सा जैसे पावन क्षेत्र में नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु उचित कदम उठाये जायें, जिससे देश में चिकित्सा सुविधाओं से वंचित एक बड़े साधनविहीन वर्ग को इनका लाभ मिल सके। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदया : डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी,

श्री राजेन्द्र अग्रवाल,

श्री पन्ना लाल पुनिया जी अपने आपको श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण जी के विषय के साथ सम्बद्ध करते हैं।